

(१३)

धन्य-धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी ।  
चिदानंद की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥टेक॥  
उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप ।  
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥१॥  
नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक, वस्तु कथंचित् भेद-अभेद ।  
अनेकांतरूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥२॥  
भाव शुभाशुभ बंधस्वरूप, शुद्ध-चिदानन्दमय मुक्तिरूप ।  
मार्ग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी ॥३॥  
चिदानंद चैतन्य आनन्द धाम, ज्ञानस्वभावी निजातम राम ।  
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥४॥

(१४)

सुनकर वाणी जिनवर की,  
म्हारे हर्ष हिये न समाय जी ॥टेक॥  
काल अनादि की तपन बुझानी,  
निज निधि मिली अथाह जी ॥१॥  
संशय, भ्रम और विपर्यय नाशा,  
सम्यक् बुद्धि उपजाय जी ॥२॥  
नर-भव सफल भयो अब मेरो,  
'बुधजन' भेंटत पाय जी ॥३॥

(१५)

मुख ओंकार धुनि सुनि अर्थ गणधर विचारै ।  
रचि-रचि आगम उपदेसै भविक जीव संशय निवारै ॥  
सो सत्यारथ शारदा, तासु भक्ति उर आन ।  
छंद भुजंगप्रयाततैं, अष्टक कहौ बखान ॥

(भुजंगप्रयात)

जिनादेश ज्ञाता जिनेन्द्रा विख्याता, विशुद्धा प्रबुद्धा नमों लोकमाता ।  
दुराचार-दुर्नहरा शंकरानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥१॥